आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

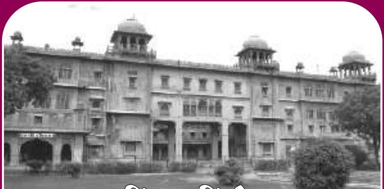

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 11 जुलाई, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

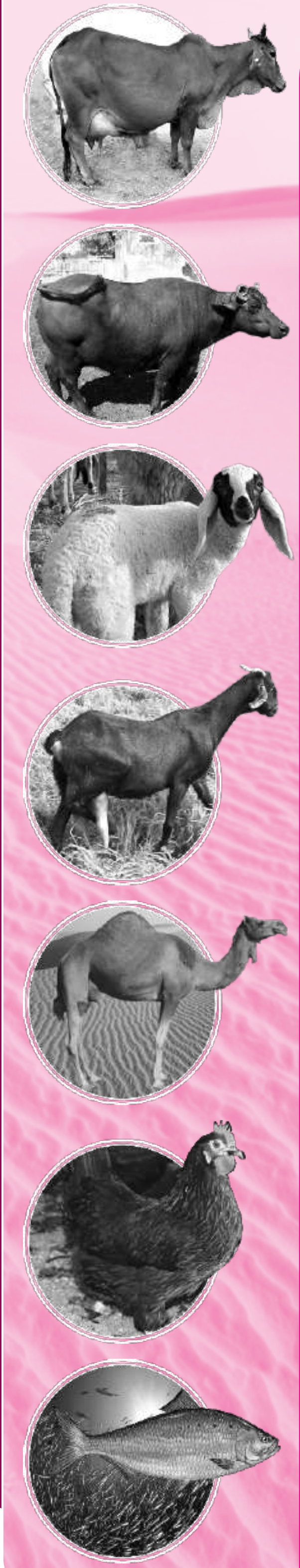

कुलपति सन्देश

जूनोटिक रोगों की रोकथाम हेतु जागरूकता जरूरी

आप सभी को विश्व जूनोटिक दिवस की हार्दिक शुभकमानाएं।

प्रत्येक वर्ष 6 जुलाई को विश्व जूनोटिक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य आमजन को जूनोटिक (प्राणीरूजा) रोगों के प्रति जागरूक करना है। प्राणीरूजा रोग वे रोग होते हैं जो पशुओं से मनुष्यों और मनुष्यों से पशुओं में फैलते हैं। विश्वभर में लगभग 150 जूनोटिक रोग हैं जो सीधे पशुओं के सम्पर्क में आने अथवा कुछ रोग वाहक जैसे श्वान, बिल्ली, चमगादड़, चिंचड़, मच्छर, मछली, सूअर, मुर्गी आदि के द्वारा फैलाये जाते हैं। आज के समय में मनुष्य प्रगति के चरम पर है तथा जाने–अनजाने में पर्यावरण व प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहा है। जिसके कारण बहुत सी अनजानी बीमारियों का होना स्वाभाविक है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम तथा अन्तर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार मनुष्यों में होने वाले 60 प्रतिशत रोग जूनोटिक रोग हैं तथा 70 प्रतिशत जूनोटिक रोग ऐसे हैं जो अभी भी ज्ञात नहीं हैं। हर वर्ष निम्न व मध्यम आय वाले देशों में 10 लाख लोगों की मृत्यु जूनोटिक रोगों के कारण हो जाती है तथा पिछले दशकों में जूनोटिक रोगों के कारण लगभग 100 बिलियन डॉलर से अधिक का आर्थिक नुकसान हुआ है। जूनोटिक रोगों में वृद्धि मुख्य रूप से पशु प्रोटीन की बढ़ती मांग, वन्यजीवों का बढ़ता उपयोग व शोषण, प्राकृतिक संसाधनों का निरन्तर उपयोग, यात्रा व परिवहन, खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में बदलाव एवं जलवायु परिवर्तन है। यदि वन्यजीवों के दोहन तथा पारिस्थितिकी तंत्र में समन्वय नहीं किया गया तो आने वाले वर्षो में पशुओं से मनुष्यों में होने वाली बीमारियां इसी प्रकार लगातार सामने आती रहेंगी। वैश्विक महामारी मानव जीवन व अर्थव्यवस्था को नष्ट करती है। जूनोटिक रोगों के प्रभावी नियंत्रण हेतु एक स्वास्थ्य–एक संकल्पना को अपनाना, रोगों के निदान हेतु स्टेट ऑफ दा आर्ट बी.एस.एल. 3 प्रयोगशालाओं की स्थापना करना, पशुजनित बीमारियों पर अनुसंधान को बढ़ावा देना, पशुजनित बीमारियों की निगरानी और नियामक तरीकों को मजबूत करना, जैव सुरक्षा एवं नियंत्रण को बेहत्तर बनाना, पशुजनित रोगों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना तथा पर्यावरण की रक्षा आदि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी प्रकार पशुपालकों को जूनोटिक रोगों के बारे में जागरूक करना, ऐसे रोगों से बचाव के उपाय व पशुओं में टीकाकरण तथा बीमारियों के वाहकों में प्रभावी नियंत्रण हेतु विशेष ध्यान रखना चाहिए। विश्वविद्यालय भी विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम जैसे किसान गोष्ठियां, रेड़ियो कार्यक्रमों तथा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं तथा वैज्ञानिकों के माध्यम से समस्त पशु विज्ञान केन्द्रों व कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से विभिन्न जूनोटिक रोगों के बारे में ग्रामीण स्तर पर सभी पशुपालकों व आमजन को जागरूक कर रहा है। सभी के स्वस्थ जीवन की कामना सहित।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

राजस्थान किसान महोत्सव, जयपुर में विश्वविद्यालय की भागीदारी

राज्य सरकार द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राजस्थान किसान महोत्सव दिनांक 16–18 जून, 2023 को एग्जीविशन एण्ड कन्वेंशन सेंटर, (जेईसीसी), सीतापुरा, जयपुर में आयोजित किया गया। इस किसान महोत्सव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान, श्री अशोक गहलोत थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री लालचंद कटारिया, माननीय मंत्री, कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य विभाग, राजस्थान ने की व अन्य मंत्रीगण व गणमान्य लोग उपस्थित रहें। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने लम्पी से मृत दुधारू पशुओं के 41,000 से अधिक पशुपालकों के खातों में 175 करोड़ राशि हस्तांतरित की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग ने भी इस कार्यक्रम में शिरकत की। इस अवसर पर आयोजित कान्फ्रेस कार्यक्रम में प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के हितार्थ की जा रही विभिन्न गतिविधियों को विस्तार से अवगत कराया।

विश्वविद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन

राजस्थान किसान महोत्सव कार्यक्रम में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी को श्री लालचंद कटारिया, माननीय मंत्री, कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य, राजस्थान, पूर्व पशुपालन शासन सचिव श्री कृष्णकुणाल सहित हजारों की संख्या में कृषकों एवं पशुपालकों ने अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की। राजुवास प्रदर्शनी संचालन में विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया के नेतृत्व में वैज्ञानिकों द्वारा राज्य की 6 स्वदेशी नस्लों में राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी के आकर्षक मॉडल रख कर उनकी विशेषताओं की जानकारी किसानों, पशुपालकों एवं आमजन को दी गई। प्रदर्शनी में डॉ. अरूण झीरवाल व डॉ. अशोक बेंदा द्वारा पशुओं के उन्नत आहार प्रबंधन, नस्ल संवर्द्धन, पशु स्वास्थ्य और उनका रख–रखाव, स्वदेशी गौवंशों की उपयोगिता और पालन के विषयों पर रंगीन मॉडल, फ्लेक्स और आकर्षक चित्रों का प्रदर्शन कर उपयोगी जानकारी दी गई तथा प्रदर्शनी स्टॉल में आने वाले सभी पशुपालकों, कृषकों को मुद्रित पशुपालन से सम्बन्धित विभिन्न साहित्यों को भी वितरित किये गये।

जाजम चौपाल का आयोजन

तीन दिवसीय राजस्थान किसान महोत्सव में पशुचिकित्सा एवं डेयरी विषय पर आयोजित जाजम चौपाल का संचालन वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा किया गया तथा वेटरनरी विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों ने विभिन्न विषयों से सम्बन्धित जाजम चौपाल में भाग लिया। जाजम चौपाल में डॉ. शीला चौधरी, डॉ. धर्मसिंह मीणा, डॉ. समिता सैनी, डॉ. सी.एस. सारस्वत, डॉ. प्रकाश शर्मा, डॉ. विकास गालव, डॉ. नवाब सिंह एवं डॉ. उमेश सुरोड़कर ने भी पशुपालन जाजम चौपाल में भाग लिया। इस जाजम चौपाल में राज्य के विभिन्न जिलों से आये किसान एवं पशुपालक उपस्थित रहें।

उदयपुर में सम्भाग स्तरीय किसान महोत्सव

उदयपुर में 26–27 जून, 2023 को दो दिवसीय सम्भाग स्तरीय किसान महोत्सव में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने हेतु एक प्रदर्शनी व जाजम चौपाल का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के प्रभारी डॉ. बी.एस सैनी ने प्रदर्शनी में आये पशुपालकों, किसानों एवं आमजन को विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी गई तथा विश्वविद्यालय द्वारा मुद्रित पशुपालन से सम्बन्धित विभिन्न साहित्यों का वितरण किया गया। जाजम चौपाल में डॉ. दीपक शर्मा, डॉ. आर.के. नागदा, प्रो. एस.के.शर्मा, डॉ. मितेश गौड़, डॉ. मोनिका जोशी, डॉ. एम.सी. शर्मा व डॉ. महेन्द्र मील सहित कई वैज्ञानिकों ने पशुपालकों के साथ चर्चा कर उनकी समस्याओं का निराकरण किया गया।

पशु अनुसंधान केन्द्रों की कार्य समीक्षा बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय के अर्न्तगत कार्यरत पशु अनुसंधान केन्द्रों की कार्ययोजना एवं प्रगति की समीक्षा बैठक 23 जून को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी पशु अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर उन्नत सांडो के सीमन का उपयोग कर कृत्रिम गर्भाधान को बढ़ावा देना होगा। पशु अनुसंधान केन्द्रों पर कम उत्पादकता वाले पशुओं को समय–समय पर नीलामी कर फार्मो के उत्पादन स्तर को बढ़ावा देना होगा। कुलपति ने सभी प्रभारी अधिकारियों को पशु अनुसंधान केन्द्रों पर उपलब्ध भूमि का समुचित उपयोग, पशुचारा उत्पादन को बढ़ाने, उन्नत पशुशाला प्रबन्धन द्वारा पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने एवं विभिन्न मदों के तहत जारी बजट राशि का समुचित उपयोग करने हेतु निर्देश दिये। अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमन्त दाधीच ने समीक्षा बैठक का संचालन करते हुए प्रगति विवरण प्रस्तुत किया।

शैक्षणिक गुणवत्ता एवं प्रशासनिक सुधार हेतु समीक्षा बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक एवं सम्बद्ध वेटरनरी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं प्रबन्धकों की बैठक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 14 जून को आयोजित की गई। बैठक को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि सम्बद्ध महाविद्यालय विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण पूरक अंग है। सभी महाविद्यालयों को गुणवत्तायुक्त शैक्षणिक वातावरण एवं विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास हेतु निरन्तर सुधार के प्रयास करने चाहिए। विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति विश्वविद्यालय की साख का आधार है। कुलपति प्रो. गर्ग. ने सम्बद्ध वेटरनरी कॉलेजो के प्रबन्धको एवं अधिष्ठाता को परीक्षा गुणवत्ता, उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकल, विद्यार्थियों को उपस्थिति पर विशेष ध्यान देने हेतु दिशा–निर्देश दिए। बैठक के दौरान परीक्षा नियंत्रक प्रो. उर्मिला पानू ने गत वर्षों के परीक्षा परीणामों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया।

आर्थिक उन्नयन हेतु दुग्ध उत्पादों का मूल्य संवर्धन आवश्यक : कुलपति प्रो सतीश के. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर एवं डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर में 1 जून, 2023 को 'विश्व दुग्ध दिवस' के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.के. गर्ग ने कहा कि आज दुग्ध उत्पादन में राजस्थान राज्य का पूरे देश में पहला स्थान है। दुग्ध व्यवसाय को आर्थिक एवं उन्नत व्यवसाय बनाने हेतु हमें पशुपालकों को वैज्ञानिक तौर पर पशुपालन के तरीके एवं नवाचारों से अवगत करवाना होगा व मूल्य संवर्धन की तकनीकों हेतु पशुपालकों का कौशल विकास करना होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोट्स डेयरी के प्रबंधन निदेशक अशोक मोदी ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से राज्य एवं बीकानेर जिले में दुग्ध व्यवसाय के विस्तृत इतिहास पर चर्चा की। अधिष्ठाता डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर, प्रो. हेमन्त दाधीच ने भी सम्बोधित किया। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. ए.पी. सिंह ने धन्यवाद दिया।

विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर एवं डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा 5 जून, 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा रैली निकाल कर जन–जन को पर्यावरण सुरक्षा का संदेश दिया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने हरी झंड़ी दिखाकर पर्यावरण सुरक्षा जागरूकता रैली को रवाना किया। प्रो. गर्ग ने विद्यार्थियों एवं फेकल्टी सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा हम सब का प्रथम कर्तव्य है पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु हमें, जीव–जन्तु, वनस्पति एवं वातावरण सभी को सुरक्षित एवं संतुलित रखना होगा।

वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं होम्योपैथी विश्वविद्यालय, जयपुर के मध्य आपसी करार

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं होम्योपैथी विश्वविद्यालय, जयपुर के मध्य 7 जून को आपसी करार (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर हुए। वेटरनरी विश्वविद्यालय, कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग एवं होम्योपैथी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.एन. माथुर ने एम.ओ.यू. के दस्तावेज एक दूसरे को हस्तान्तरित किये। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि इस एम.ओ.यू. का उद्देश्य वेटरनरी क्षेत्र में होम्योपैथी की उपयोगिता, व्यापकता एवं शोध की नई संभावनाओ का पता लगाना है। पशुओं की कई बीमारियों के ईलाज हेतु होम्योपैथी को सहयोगी दवा के रूप में उपयोग हो रहा है। लेकिन अभी भी इस क्षेत्र में होम्योपैथी मेडिसिन का प्रभाव, दवा की मात्रा, मेडिसिन कोम्बीनेशन आदि में प्रमाणिकरण का अभाव है। इस एम.ओ.यू. के माध्यम से दोनो विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ होम्योपैथी के क्षेत्र में ईलाज एवं शोध की नवीन सम्भावनाओं को तलाशेंगे। निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बी.एन.श्रृंगी एम.ओ.यू. कार्यक्रम के संयोजक रहे।

कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर में वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर की दसवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन 28 जून को केवीके परिसर में किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय कुलपति प्रो सतीश के. गर्ग ने अपने उद्बोधन में कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर का क्षेत्र के कृषको के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं तथा इस केंद्र द्वारा आगामी समय में तकनीकी प्रसार व अनुसंधान के द्वारा कृषि के क्षेत्र में लाभप्रद आयाम स्थापित करने के प्रयास किये जायेंगे। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया व डॉ. पी. पी. रोहिल्ला प्रधान वैज्ञानिक, अटारी, जोधपुर ने बैठक में प्रभाव आंकलन अध्ययन, आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण व आय सृजन गतिविधियों से सम्बंधित सुझाव साझा किये। इस अवसर पर डॉ सुरेश चंद कांटवा प्रभारी केवीके व अन्य विशेषज्ञों ने गत वर्ष की उपलब्धि व आगामी कार्यरेखा प्रस्तुत की।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

नौवां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस वेटरनरी विश्वविद्यालय में 21 जून को मनाया गया। 'वसुधैव कुटुंबकम के लिए योग' विषय पर आयोजित योग दिवस पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने सम्बोधित करते हुए कहा कि योग एवं प्राणायाम भारत में स्वस्थ जीवन की प्राचीन पद्धति है जिसको ऋषिमुनी नियमित दिनचर्या के रूप में अपनाते थे एवं स्वस्थ एवं संयमित जीवन यापन करते थे। आज भारत की इस योग पद्धति को पूरा विश्व योग दिवस के रूप में मना रहा है। हम योग एवं प्राणायाम के माध्यम से इन बीमारियों से छुटकारा पाकर एक स्वस्थ भारत के निर्माण में सहयोग कर सकते है। योग प्रशिक्षक श्री सुरेश गुप्ता ने विभिन्न योग मुद्राओ एवं प्राणायाम का अभ्यास करवाया तथा विभिन्न योग मुद्राओं के लाभ बताये। कार्यकारी अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण का महत्व

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र की ओर से यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अर्न्तगत गोद लिए गांव गाढ़वाला के पंचायत भवन में 5 जून, 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि केन्द्र के विशेषज्ञ शैलेन्द्र सिंह शेखावत एवं डॉ. सोहेल ने ग्राम वासियों को प्लास्टिक के दुष्प्रभाव, पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य एवं महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर पशुपालकों को निःशुल्क पौधो का वितरण किया गया एवं पर्यावरण संरक्षण कि शपथ दिलाई गई।

पशु स्वास्थ एवं जागरूकता शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र, बीकानेर द्वारा 21 जून को गाढ़वाला गाँव मे पशु स्वास्थ शिविर व पशुओं की देखभाल संबंधित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। केन्द्र के प्रभारी डॉ. मोहनलाल चौधरी ने बताया कि शिविर में पशुपालकों को पशुओं में होने वाली विभिन्न बीमारियों के कारण एवं रोकथाम की जानकारी प्रदान की गई। डॉ. नरसीराम गुर्जर ने पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाव हेतु कृमिनाशक दवा एवं टीकाकरण के बारे में बताया। डॉ. प्रतिक्षित सानेल ने पशुओं में बांझपन की समस्या के निदान की पशुपालकों को विस्तृत जानकारी प्रदान की। शिविर के दौरान पशुपालकों को कृमिनाशक दवाईयों व मिनरल मिक्चर का वितरण भी किया गया। इस शिविर में 27 पशुपालको ने भाग लिया। इस अवसर पर भवानी शंकर गुर्जर, सुखाराम, रामलाल, पूनम, मंजू देवी, मीरा, राजेन्द्र भामू आदि पशुपालक मौजूद रहे।

जल संरक्षण हेतु जागरूकता रैली

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांव गाढ़वाला में 30 जून को जल संरक्षण के प्रति जागरूकता हेतु रैली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि जल का रोजमर्रा के साथ–साथ कृषि एवं पशुपालन हेतु भी उपयोग होता है। जल के निरंतर उपयोग से भूमि जल स्तर बहुत नीचे गिरता जा रहा है। यदि गांव में वर्षा जल का समुचित संधारण किया जाये तो जल की कमी के संकट से निजात पाया जा सकता है अतः हम सब को मिलकर संरक्षण के कार्य के क्रियान्वयन के साथ–साथ ग्रामीणों को भी इसके प्रति जागरूक करना होगा तभी जल का समुचित उपयोग हो सकेगा। गांव में रैली निकालकर ग्रामीणों को जल संरक्षण हेतु जागरूक किया गया। रैली में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वंय सेवकों ने भागीदारी निभाई। गाढ़वाला के सरपंच प्रतिनिधि मोहनलाल सारण ने हरी झण्डी दिखाकर रैली का शुभांरभ किया। प्रसार शिक्षा विभाग के छात्र डॉ. विश्वास कुमार एवं डॉ. अभिषेक का कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग रहा।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जुलाई, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
बबेसिओसिस	गाय	–	–	गंगानगर, हनुमानगढ़
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, भीलवाड़ा, चूरू, दौसा, धौलपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	–	बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, चूरू, धोलपुर, जैसलमेर, झालावाड़, जोधपुर, प्रतापगढ़
पी.पी.आर.	बकरी	चूरू	गंगानगर, हनुमानगढ़	बांसवाड़ा, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, दौसा, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनू, जोधपुर, नागौर, सीकर, उदयपुर
ट्रीपनोसोमियोसिस	ऊंट, गाय, भैंस	उदयपुर	बाड़मेर, जोधपुर	–
बी.क्यू.	गाय, भैंस	–	–	बांसवाड़ा
लीवरफ्लुक (फेसिओलोसिस)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	चूरू	–	–
भेड़ माता और बकरी माता रोग	भेड़, बकरी	–	–	बांसवाड़ा, बारां

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6, 13, 17 एवं 30 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर 1 जून को गांव रंगमहल में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 162 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 3, 5, 7, 16, 17, 19 एवं 22 जून को गांव चौकीपुरा, कंचनपुरा, सिकरोरी, घनवारा, पूंठ, अजयपुरा एवं पीढ़ी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 13, 15, 16, 20, 22, 24 एवं 26 जून को गांव .केरू, नारवा, बड़ली, चौखा, सोढ़ों की ढाणी, गन्डेरो की ढाणी एवं गोलासनी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 3, 5, 9, 15, 19, 24 एवं 27 जून को गांव टांडा, मुगरवा, सन्तपुर, ऐढलपुर, भागीरथपुरा, महाराजपुरा एवं नगरिया गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 205 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 5, 9, 12, 15 एवं 19 जून को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों से 119 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 16 एवं 23 जून को गांव राजपुरा एवं वेरापुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 45 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 7, 9, 14, 17, 19, 20, 21, 26, 27 एवं 28 जून को गांव तिबारिया, कुचावास, नयाबास, ढाणी बोराज, खण्डेल, हरिपुरा, रामसिंहपुरा, जालसु आमेर, टिण्डा एवं लोहरवाड़ा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 236 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 6, 7, 8, 12, 13, 14, 15 एवं 16 जून को गांव धुधवा मिठ्ा, घटेंलबास, बालरासर आथुणा, उदासर, गोगासर, लढ़ासर, मालसर एवं राणासर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 187 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 8, 14, 20 एवं 23 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 17 जून को गांव कड़ीला में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 156 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 9 एवं 12 जून को गांव डगारिया, गावन्डी एवं नया गांव अहीरान में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 79 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 9, 12, 19, 23 एवं 26 जून को गांव घोड़ी आमली, अंबाखेडा, सुंदरपुर, रामपुर एवं वागदारी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 9, 14 एवं 19 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर दिनांक 1 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 6, 9, 27 एवं 30 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 6, 12, 22, 26 व 28 को गांव देलदारी, मांडोली, पावली, भीमपुर एवं खानपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 125 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 9, 13, 15 एवं 16 जून को गांव दीपलना, रानीसर, रतनपुरा एवं चारनवासी गांवो में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 123 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

एफ्लाटोक्सिकोसिस से अपने पशुओं को बचाएं

गर्मियों के मौसम में पशुओं को बासी व लम्बे समय तक भण्डारित किया हुआ बासी व फफूंदी लगा हुआ खाना देने से यह बीमारी होती है, जो कि फफूंद कवक के कारण से होती है। यह कवक माइक्रोटॉक्सिन उत्पन्न करती है जो पशुओं के लिए काफी हानिकारक होते हैं। माइक्रोटॉक्सिन मुख्यतः तीन प्रकार की कवक प्रजातियों द्वारा उत्पन्न किया जाता है जैसे एस्परजिलस, फ्युसेरियम और पेनिसिलियम जिनमें से एस्परजिलस ही एफ्लाटॉक्सिन को उत्पन्न करने वाला मुख्य कवक है। एफ्लाटोक्सिकोसिस या फफूंद विषाक्तता पशुपालकों की एक मुख्य समस्या है, जो पशुओं के स्वास्थ्य के साथ–साथ पशुपालकों एवं किसानों के आर्थिक नुकसान के लिए भी उत्तरदायी है। पशुओं में दुग्ध उत्पादन के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है। अतः इसके लिए पशुपालक पशुओं को खल, बिनौले, चारा तथा विभिन्न प्रकार के अनाज के दाने के रूप में पशुओं को खिलाते है तथा इसका भण्डारण भी करते है। अगर इस प्रकार के आहार का सावधानी पूर्वक भण्डारण न किया जाए तो इसमें फफूंदी पैदा हो जाती है तथा यह फफूंदी एफ्लाटोक्सिन उत्पन्न करती है। मुख्य रूप से यह फफूंदी नमी तथा गर्म वातावरण में अधिक पैदा होती है। एफ्लाटोक्सिन सभी तरह के पशु–पक्षियों में पायी जाती है तथा यह सबसे ज्यादा शरीर में लीवर (यकृत) को नुकसान पहुंचाती है। पशु खाना–पीना कम कर देते है, बाद में पीलिया रोग हो जाता है तथा यह पशुओं के मस्तिष्क पर भी प्रभाव डालता है। यदि समय पर इसका इलाज न किया जाए तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

रोग के लक्षण :

❖ पशुओं में सुस्ती व कमजोरी आ जाना।
❖ पशुओं का दुग्ध उत्पादन भी कम हो जाता है।
❖ पशु खाना–पीना कम कर देता है।
❖ पशुओं में दस्त के साथ खून आने लगता है जिससे खून की कमी यानि की एनिमिया हो जाता है।
❖ भैंसों में पीलिया तथा गायों में मस्तिष्क के लक्षण पाये जाते है।
❖ अंधापन, पशुओं का गोल घेरे में चलना एवं दिमागी लक्षण मुख्य रूप से देखने को मिलते है।

निदान : लक्षणों के आधार पर एवं प्रयोगशाला में परीक्षण द्वारा

उपचार :

❖ उपचार के लिए पशुचिकित्सकों से सलाह लेना चाहिए।
❖ पशुओं को लीवर टॉनिक देना चाहिए।
❖ पशुओं को सुखा चारा या हरा चारा को धूप में सुखाकर ही देना चाहिए। ताजा हरा चारा ही पशुओं को खिलाना चाहिए।
❖ पशुओं के आहार में टॉक्सिन बाइंडर का उपयोग करना लाभदायक रहता है।
❖ पशुशाला की साफ–सफाई एवं स्वच्छता का भी ध्यान रखना चाहिएं।
❖ पशुशाला सूखी व हवादार होनी चाहिए।
❖ चारा भण्डारण का स्थान भी सूखा व स्वच्छ होना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

बकरी पालन व्यवसाय कम लागत में अधिक मुनाफा : गोपाल सिंह

ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन एक प्रमुख साधन है इस कड़ी में बकरी पालन एवं भेड़ पालन बहुत लोकप्रिय पशुपालन है। आज के परिवेश में एक कत्थक बहुत महत्वपूर्ण है आज जब एक और पशुओं का दाना चारा एवं दवाईयां महंगी साबित होने से पशुपालन आर्थिक दृष्टि से कम लाभकारी साबित हो रहा है, वंही दूसरी ओर बकरी पालन व भेड़ पालन कम लागत व सामान्य देखरेख में गरीब किसानों एवं खेतिहर मजदूरों का जीविका का एक महत्वपूर्ण साधन है। ऐसे में चूरू जिले के तहसील तारानगर के गांव कोहिना निवासी गोपाल सिंह एक खेतिहर किसान है, जिन्होंनें बकरी पालन व भेड़ पालन अपना कर अपनी आजीविका का साधन बनाया तथा पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) में सम्पर्क कर बकरी फार्म में बकरियों के रख–रखाव एवं खानपान की जानकारी के साथ–साथ बकरियों के आवास, संतुलित आहार प्रबंधन, ग्याभिन पशुओं के आहार प्रबंधन, ब्रीडर बकरों एवं मेमनों के आहार प्रबंधन के साथ–साथ बकरियों की समुचित वृद्वि हेतु नियमित समय अंतराल पर कर्मीनाशक दवाईयों का उपयोग, बकरियों के विभिन्न रोगों हेतु टीकाकरण, खनिज मिश्रण का महतव आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसे अपनाया जिससे उनकी सभी बकरियां स्वस्थ है। वर्तमान में इनके पास 115 बकरियां तथा 80 भेड़ें है। गोपाल सिंह बकरी पालन के इस व्यवसाय से कम समय में अधिक लाभ से संतुष्ट और बहुत खुश है एवं इनकी आर्थिक स्थिति भी काफी सुधर गई है। गोपाल सिंह नियमित तौर पर पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ से संपर्क कर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेते रहते है। गोपाल सिंह गांव के अन्य लोगों को भी बकरी पालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते रहते है, ताकि वह लोग भी कम समय में कम निवेश कर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सके। गोपाल सिंह का कहना है कि जो लोग बड़े पैमाने पर बकरी पालन करते हैं वह इससे अच्छा मुनाफा कमा पाते है जो कि बकरे का मांस और बकरी के दूध की मांग बाजार में हमेशा रहती है ऐसे में बकरी पालन आमतौर पर घाटे का व्यवसाय नहीं है। गोपाल सिंह अपनी सफलता का श्रेय पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ को देते है।

सम्पर्क– गोपाल सिंह पुत्र मालम सिंह
गांव कोहिना, तहसील तारानगर जिला चूरू (मो. 7737068791)

जैव विविधता: महत्व, क्षरण एवं संरक्षण

जैव–विविधता (जैविक विविधता) जीवों के बीच पायी जाने वाली विभिन्नता है जो कि प्रजातियों में, प्रजातियों के बीच और उनकी पारितंत्रों की विविधता को भी समाहित करती है। जैव–विविधता शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम वाल्टर जी. रासन ने 1985 में किया था। जैव–विविधता तीन प्रकार की हैं। आनुवंशिक विविधता, प्रजातीय विविधता तथा पारितंत्र विविधता। प्रजातियों में पायी जाने वाली आनुवंशिक विभिन्नता को आनुवंशिक विविधता के नाम से जाना जाता है। यह आनुवंशिक विविधता जीवों के विभिन्न आवासों में विभिन्न प्रकार के अनुकूलन का परिणाम होती है। प्रजातियों में पाई जाने वाली विभिन्नता को प्रजातीय विविधता के नाम से जाना जाता है। किसी भी विशेष समुदाय अथवा पारितंत्र (इकोसिस्टम) के उचित कार्य के लिये प्रजातीय विविधता का होना अनिवार्य होता है। पारितंत्र विविधता पृथ्वी पर पायी जाने वाली पारितंत्रों में उस विभिन्नता को कहते हैं जिसमें प्रजातियों का निवास होता है। पारितंत्र विविधता विविध जैव–भौगोलिक क्षेत्रों जैसे–झील, मरुस्थल, ज्वारन्मुख आदि में प्रतिबिम्बित होती है।

जैव–विविधता का महत्त्व–जैव–विविधता का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है तथा जैव–विविधता के बिना पृथ्वी पर मानव जीवन असंभव है।

जैव–विविधता के विभिन्न लाभः

❖ जैव–विविधता भोजन, कपड़ा, लकड़ी, ईंधन तथा चारा की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है

❖ जैव–विविधता कृषि पैदावार बढ़ाने के साथ–साथ रोग प्रतिरोधी तथा कीटरोधी फसलों की किस्मों के विकास में सहायक होती हैं।

❖ वानस्पतिक जैव–विविधता औषधीय आवश्यकताओं की पूर्ति भी करती है। एक अनुमान के अनुसार आज लगभग 30 प्रतिशत उपलब्ध औषधियों को उष्णकटिबंधीय वनस्पतियों से प्राप्त किया जाता है।

❖ जैव–विविधता पर्यावरण प्रदूषण के निस्तारण में सहायक होती है। प्रदूषकों का विघटन तथा उनका अवशोषण कुछ पौधों की विशेषता होती है। सदाबहार (कैथरेन्थस रोसियस) नामक पौधे में ट्राइनाइट्रोटालुइन जैसे घातक विस्फोटक को विघटित करने की क्षमता होती है। सूक्ष्म–जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ जहरीले बेकार पदार्थों के साफ–सफाई में सहायक होती हैं। सूक्ष्म जीवों की स्यूडोमोनास प्यूटिडा तथा आर्थोबैक्टर विस्कोसा में औद्योगिक अपशिष्ट से विभिन्न प्रकार के भारी धातुओं को हटाने की क्षमता होती है। पौधों की कुछ प्रजातियों में मृदा से भरी धातुओं जैसे कॉपर, कैडमियम, मरकरी, क्रोमियम के अवशोषण तथा संचयन की क्षमता पायी जाती है।

❖ जैव–विविधता पारितंत्र को स्थिरता प्रदान कर पारिस्थितिक संतुलन को बरकरार रखती है। पौधे तथा जन्तु एक दूसरे से खाद्य श्रृंखला तथा खाद्य जाल द्वारा जुड़े होते हैं। एक प्रजाति की विलुप्ति दूसरे के जीवन को प्रभावित करती है। इस प्रकार पारितंत्र कमजोर हो जाता है।

❖ पौधे शाकभक्षी जानवरों के भोजन के स्रोत होते हैं जबकि जानवरों का मांस मनुष्य के लिये प्रोटीन का महत्त्वपूर्ण स्रोत होता है।

❖ समुद्र के किनारे खड़ी जैव–विविधता संपन्न ज्वारीय वन (मैंग्रोव वन) प्राकृतिक आपदाओं जैसे समुद्री तूफान तथा सुनामी के खिलाफ ढाल का काम करते हैं।

❖ जैव–विविधता विभिन्न सामाजिक लाभ भी हैं। प्रकृति, अध्ययन के लिये सबसे उत्तम प्रयोगशाला है। शोध, शिक्षा तथा प्रसार कार्यों का विकास, प्रकृति एवं उसकी जैव–विविधता की मदद से ही संभव है। इस बात को साबित करने के लिये तमाम साक्ष्य हैं कि मानव संस्कृति तथा पर्यावरण का विकास साथ–साथ हुआ है। अतः सांस्कृतिक पहचान के लिये जैव–विविधता का होना अति आवश्यक है।

जैव–विविधता का क्षरण– पृथ्वी पर जैविक संसाधनों के क्षय को जैव विविधता क्षरण के नाम से जाना जाता है। पृथ्वी का जैविक धन जैव–विविधता लगभग 400 करोड़ वर्षों के विकास का परिणाम है। इस जैविक धन के निरंतर क्षय ने मनुष्य के अस्तित्व के लिये गम्भीर खतरा पैदा कर दिया है। जैव–विविधता क्षरण के विभिन्न कारण हैं जिनमें आवास विनाश, आवास विखण्डन, पर्यावरण प्रदूषण, विदेशी मूल के पौधों का आक्रमण, अति–शोषण, वन्य जीवों का शिकार, वनविनाश, अति–चराई, बीमारी, चिड़ियाघर तथा शोध हेतु प्रजातियों का उपयोग नाशीजीवों तथा परभक्षियों का नियंत्रण, प्रतियोगी अथवा परभक्षी प्रजातियों का प्रवेश प्रमुख है–

जैव–विविधता का संरक्षण – जैव विविधता संरक्षण का आशय जैविक संसाधनों के प्रबंधन से है जिससे उनके व्यापक उपयोग के साथ–साथ उनकी गुणवत्ता भी बनी रहे। चूँकि जैव–विविधता मानव सभ्यता के विकास की स्तम्भ है इसलिये इसका संरक्षण अति आवश्यक है। जैव–विविधता हमारे भोजन, कपड़ा, औषधीय, ईंधन आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जैव–विविधता संरक्षण की मुख्यतः दो विधियां होती हैं जिन्हें यथास्थल संरक्षण तथा बहिःस्थल संरक्षण के नाम से जाना जाता है।

डॉ. एम.एल. चौधरी, डॉ. नरसीराम गुर्जर
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

बारिश के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल जरूरी

राजस्थान में बरसात का मौसम जून से सितम्बर तक रहता है। मानसूनी बारिश का पशु स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है, इससे पशुपालकों को आर्थिक नुकसान भी होता है। अतः बरसात के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल जरूरी है। बरसात के मौसम में पशुशाला का फर्श गीला होने के कारण फिसलन बढ़ जाती है, जिससे पशुओं में गिरकर चोट लगने अथवा पैर टूटने का खतरा बना रहता है। फर्श के गीला होने तथा जलभराव के कारण कई बार पशुओं में गम्भीर रोग जैसे कॉक्सीडिया, फुटरोट आदि रोग हो जाते है। अतः बाड़े में जलभराव न होने दें तथा बाड़े की छत से पानी के रिसाव का भी विशेष ध्यान रखें। सप्ताह में कम से कम दो बार पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करना चाहिए। पशुपालकों को बरसात का मौसम शुरू होने से पहले ही गाय, भैंसों को गलघोटूं, लंगड़ा बुखार आदि का टीका लगवा लेना चाहिए। बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी की समस्या भी बढ़ जाती है, यदि बाड़े में अत्यधिक संख्या में किलनियां होगी तो मवेशियों में सर्रा, थिलिरियोसिस, बबेसियोसिस आदि रोग हो जाते है। अतः पशुपालकों को परजीवी संक्रमण को कम करने के लिए परजीविनाशक औषधि का पशु के शरीर पर स्प्रे करना चाहिए। बरसात के मौसम में बछड़ों को बाड़े तक ही सीमित रखना चाहिए तथा अन्य दिनों के मुकाबले दूध का थोड़ा ज्यादा सेवन करवाना चाहिए। एक माह से अधिक उम्र के बछड़ों में नियमित अंतराल पर कृमिनाशक दवा पिलानी चाहिए। इसी प्रकार भेड़ व बकरियों को भी कृमिनाशक दवा पिलानी चाहिए तथा पी.पी.आर तथा फड़किया रोग का टीकाकरण करवाना चाहिए। बरसात के मौसम में पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सुखा चारा पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए। यदि संभव हो तो हरे चारे को पशुओं को खिलाने से पहले धूप में सुखा लेवें। वातावरण में अत्यधिक आर्द्रता होने के कारण सूखे चारे में फफूंद लग सकती है अतः बरसात का मौसम शुरू होने से पहले ही सुखे चारे का भण्डारण उचित स्थान पर कर लेना चाहिए। पशुपालकों को बरसात के दिनों में पशुओं की उचित देखभाल कर उनकी उत्पादकता बनाएं रखने पर ध्यान देना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया